

12. प्राकृत भाषा में प्रमाण पत्र (CERTIFICATE IN PRAKRIT LANGUAGE)

उद्देश्य : नालन्दा खुला विश्वविद्यालय ने प्राकृत भाषा में सर्टिफिकेट पाठ्यक्रम प्रारंभ किया है। वास्तव में, भारतीय संस्कृति, सभ्यता, समाज, राजनैतिक संगठन आदि का यथार्थ ज्ञान प्राप्त करने के लिए प्राकृत साहित्य बहुत उपयोगी है। जनसाधारण से लेकर राजा-महाराजाओं तक के चित्र स्पष्टता, सूक्ष्मता और विस्तार के साथ प्राकृत साहित्य में चित्रित हैं। जीवन के विस्तार, व्यवहार, विश्वास में जितनी समस्याएँ और परिस्थितियाँ आती हैं, उनका बार-बार निरूपण प्राकृत साहित्य में पाया जाता है। अतः प्राचीन भाषा और साहित्य को जानने के लिए प्राकृत भाषा का अध्ययन नितान्त आवश्यक है। प्राकृत भाषा का प्रचार सिर्फ काव्यों में ही नहीं, बल्कि प्राचीन युग में जन-जन में था। जनता इस भाषा का उपयोग करती थी। इसका सबसे बड़ा प्रमाण तत्कालीन शिलालेख हैं। भगवान् महावीर के उपदेश, जो आगम साहित्य में संकलित हैं, प्राकृत भाषा में ही निबद्ध हैं, जो अध्यात्म का समृद्ध कोश है। **पाठ्यक्रम में नामांकन के लिये न्यूनतम योग्यता मैट्रिक पास है।**

पाठ्यक्रम संरचना : प्राकृत भाषा के षड्मासीय सर्टिफिकेट कोर्स में तीन पत्र होंगे। प्रत्येक पत्र 100 अंकों का होगा और प्रत्येक पत्र की परीक्षा अवधि तीन घण्टे की होगी। सभी सैद्धान्तिक पत्रों में 80 अंकों के लिये लिखित परीक्षा होगी एवं 20 अंकों का सत्रीय कार्य जमा करना होगा। पत्रों का विवरण नीचे दिया गया है :

Scheme of Examination - Students being admitted to this course must pass in each paper of the examination to pass the certificate course. To pass in each paper, a student must secure at least 33% of marks in each paper separately. To determine 33% of marks in each paper, the marks obtained by a student, both in term-end written examination and home assignment, shall be clubbed and counted together to determine the aforesaid percentage. However, if a candidate has secured Zero mark in the term-end written examination or home assignment examination in any paper, as the case may be, he/she will be deemed to have failed in that paper. Failure in one paper will mean failure in that part of the examination. Hence, students must strive hard to pass separately in each paper.

The term-end examination shall be held at the end of the academic session and, as said, it will be compulsory to pass in each paper of the examination before a student is declared to have passed his/her certificate course.

This course is divided into 3 papers; each carrying 100 marks. The distribution of marks between written examination assignment and practical work will be as follows:

Paper	Title of the paper	Distribution of Marks Between Theory and Assignment		Minimum Marks required to pass the examination (written exam. + Assignment)
		Written exam	Assignment	
1	प्राकृत भाषा का उद्भव और विकास	80	20	33
2	प्राकृत साहित्य का इतिहास	80	20	33
3	प्राकृत भाषा व्याकरण एवं रचना	80	20	33
	Total	240	60	33 marks in each papers